

POST GRADUATE CERTIFICATE IN  
BENGALI - HINDI TRANSLATION  
PROGRAMME (PGCBHT)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2012

एम.टी.टी.-002 : बांग्ला-हिन्दी अनुवाद : तुलना और पुनर्सृजन  
समय : 3 घंटे अधिकतम अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

1. **किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 300 शब्दों में दीजिए। 10x2=20**
  - (a) बांग्ला और हिंदी की सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली की अथर्गत समानताएँ एवं असमानताएँ सोदाहरण प्रस्तुत कीजिए।
  - (b) हिंदी और बांग्ला में प्रयुक्त विशेषणों का तुलनामूलक विवेचन कीजिए।
  - (c) लोकोक्ति और मुहावरे का अंतर बताते हुए हिंदी और बांग्ला में इनके प्रयोगों पर प्रकाश डालिए।
2. निम्नलिखित बांग्ला शब्दों का हिंदी पर्याय लिखिए - 5  
नानान, वयस, गभीर, दूधेल, जामा, पिँपडे, बड़, गा, बूक, घूम।
3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों का बांग्ला पर्याय लिखिए - 5  
खून, मेहनत, तरीका, यकीन, डोर, ताकि, सुबह, चूल्हा, महँगा, मेंढक।

4. निम्नलिखित कहावतों-मुहावरों में से **किन्हीं पाँच** का हिन्दी 10

अनुवाद करते हुए वाक्य में प्रयोग करें :

আপনার পায়ে আপনি কুড়ল মারা।

বেগন মুখে

উঠতি তারকা

আহ্লাদে আটখানা হওয়া

ঘরের শত্রু বিভীষণ

চোখ রাঙানো

ছোটো মুখে বড় কথা

শিমূল ফুল

বোবার শত্রু নেই

5. निम्नलिखित अंशों में से **किन्हीं तीन** का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

15x3=45

(a) অক্টোবরের গোড়ার দিকে এখানকার কয়েকজন মহিলা কন্সী একটি মহিলা সম্মেলন করিতে চান। তাহাতে, সারা বাংলাদেশে যে-সব মহিলা শিক্ষাদান ও অন্যান্য উপায়ে পল্লীউন্নয়ন প্রভৃতি কাজ করেন, তাঁহাদিগকে আহ্বান করা হইবে। যাঁহারা ইহার উদ্যোগ করিতেছেন, তাঁহাদের একান্ত ইচ্ছা আপনি এই সম্মেলনটির উল্লেখন করেন। আমিও মনে করি, আপনি ইহা করিলে যেরূপ শুভফল হইবে, অন্য কেহ তাহা করিলে সেরূপ হইবে না। আপনি সম্মত হইলে তারিখ আপনার সুবিধামত

নির্ধারিত হইবে। সম্মেলনটির উদ্যোগ শ্রীমতী লাবণ্যলতা চন্দ করিতেছেন। ইনি ময়মনসিংএর শ্রীনাথ চন্দ মহাশয়ের কন্যা, আগে একটি গভর্নেন্ট উচ্চ বালিকা বিদ্যালয়ের প্রধান শিক্ষয়িত্রী ছিলেন। তাহা স্বেচ্ছায় ছাড়িয়া দিয়া দেশহিতকর কার্যে আত্মনিয়োগ করিয়াছেন। এখন ভবানীপুরে একটি নারী প্রতিষ্ঠান চালান। তাহাতে পল্লীগrame শিক্ষয়িত্রীর কাজ করিবার নিমিত্ত প্রাপ্তবয়স্কা ছাত্রীদিগকে শিক্ষা দেওয়া হয়।

- (b) রাস্তায় একসূত্রে গাঁথা পরের পর ঠায় একই ধরনের চারটি গ্রাম। ধুলোয় ধূসর। ধারেকাছে না বাগবাগিচা, না বনজঙ্গল। লিকলিকে প্যাকাটির বেড়া। এখানে সেখানে রংচঙে চটকদার বিলমিল। রাস্তার মধ্যখানে দাঁড়িয়ে পাল্পে গা আঁচড়াচ্ছে এক ব্যাটা শুয়ার। একটা সাইকেলের ছায়া পাশ দিয়ে সাঁ করে যেই না যাওয়া, এক সারে চলা একঝাঁক রাজহাঁস মহানন্দে গলায় ভেঁপুর আওয়াজ করে দাবড়ানি দিল। মুরগির ছানাগুলো খাবারের খোঁজে উঠে পড়ে লেগে রাস্তা আর উঠোন আঁচড়াচ্ছে।

কনস্তুস্তিনোভের গ্রাম্য মুদীর দোকানটিও কম যায় না- দেখতে মুরগির বাসার মতই রোগাপটকা। নোনা হেরিংমাছ। ভোদকার গোটাকতক ব্রান্ড। এক ধরণের আঠা-আঠা

মিঠাইমোরববা, বছর পনেরো আগেই লোকরুটি থেকে যার পাট উঠে গেছে। শহরে তুমি যে রুটি কেনো, তার দ্বিগুণ ভারী গোল গোল কালো পাঁউরুটি - দেখলে মনে হবে ও - রুটি কাটতে ছুরি তো নয়, কুড়ুল লাগবে।

- (c) অন্য এক ধরনের গল্পে ফেলুদা, তপসে এবং লালমোহনবাবু বলে তিনজন লোককে দেখা যায়। নায়ক নিঃসন্দেহে ফেলুদা অথবা প্রদোষ মিত্র। তপসে ফেলুদার গুণমুগ্ধ ভ্রাতা। তপসে গল্প বলে, কিন্তু তার বুদ্ধি আছে বলে মনে হয় না। ফেলুদা গোয়েন্দা, প্রখর বুদ্ধিসম্পন্ন এবং প্রচুর জ্ঞানের অধিকারী। দেখতেও সুপুরুষ। এই ধরনের গল্পকে সে-যুগে গোয়েন্দা গল্প বলা হত। গোয়েন্দাদের কাজ ছিল অপরাধীদের ধরে দেওয়া। এই ধরনের গল্প ভারতীয় সব ভাষায় এবং অন্যান্য বিদেশী ভাষায় সে যুগে খুবই চালু ছিল। বিদেশী গল্পগুলিতেও গোয়েন্দারা চালাক হ'ত তাদের সহকারীরা বোকা হত। গল্পকার সত্যজিৎ রায় লালমোহনবাবুকে এনেছেন বারবার একজন বোকা লোককে নিয়ে আমোদ করবার জন্য। এ প্রসঙ্গে রামকিঙ্কর মহাশয়ের মন্তব্য প্রণিধানযোগ্য। সে যুগে মানুষ অত্যন্ত নিষ্ঠুর ছিল। হিংসা দ্বেষ মারামারি হানাহানি যখন

করত না তখন মানুষকে তুচ্ছ করে আহ্লাদ করত। তবে আজ এত শতাব্দী কাটার পরও হাস্যরসের উপাদানের মধ্যে একটু নিষ্ঠুরতা এখনো লুকিয়ে থাকে। মানুষ যত সভ্য হচ্ছে নিষ্ঠুরতা কমছে এবং নিষ্ঠুরতাকে আমরা হাসির প্রলেপ দিচ্ছি। সত্যজিৎ রায় এ ব্যাপারে পূর্বসুরী।

- (d) ১৯৮৭ সালে সত্যজিতের শেষ তথ্যচিত্র 'সুকুমার রায়' নির্মিত হয়। পশ্চিমবঙ্গ সরকার এই চিত্রটি প্রয়োজনা করে সুকুমার জন্মশতবর্ষে। পিতার ৩৬ বছরের অনন্য জীবনের ওপর পুত্র সত্যজিতের তথ্যচিত্র। রবীন্দ্রনাথের মতো এখানেও নেই কোন 'ফিল্ম ফুটেজ'। আর তিনিও চান নি সুকুমার রায়ের ভূমিকায় কোন 'অভিনেতা'। সুতরাং এখানেও তাঁর সম্বল সুকুমারের লেখা, আঁকা আর নাটক। এর আগে রবীন্দ্রনাথ ও সিকিমের তথ্যচিত্রের ভাষ্যকার ছিলেন তিনি নিজেই। এ ছবিতে ভাষ্যকার রাখলেন সৌমিত্র চট্টোপাধ্যায়কে। 'হ য ব র ল', 'লক্ষণের শক্তিশেল' আর 'ঝালাপালা' নাটকের অংশে অভিনয় করালেন উৎপল দত্ত, সন্তোষ দত্ত, সৌমিত্র চট্টোপাধ্যায় প্রমুখ অভিনেতাদের দিয়ে। সুকুমার রায় তথ্যচিত্রের অন্যতম আকর্ষণ হল ভাষ্যপাঠ, সুকুমার অঙ্কিত ছবি এবং হ য ব র ল-এর অভিনয়।

এই ছবি যে তাঁরই অসামান্য প্রতিভাধর পিতাকে নিয়ে তথ্যচিত্র তা তিনি আমাদের মনে করতে দেননি। আর বাবাকে নিয়ে ছেলের তৈরি করা তথ্যচিত্র বোধকরি জগতে এই প্রথম নির্মিত হল। খুব নৈর্ব্যক্তিকভাবে ছবির শেষ দিকে শুধুমাত্র তথ্যের খাতিরে বলা হল, ১৯২১-এর ২রা মে তাঁর একমাত্র পুত্রের জন্ম।

(e) ভোরের অনেক আগেই আজ ঘুম ভেঙে গেল তমালের। দরজা খুলে বেরিয়ে এল বারান্দায়। একটা ইঁজি চেয়ার টেনে তাতে এলিয়ে দিল শরীর। তাকিয়ে দেখল, সামনের উত্তাল সমুদ্রের বুকে তখনও লেপটে আছে আবছা কুয়াশা। আকাশের পশ্চিম কিনারে একটা তারা কখনও দপ্ দপ্ করছে।

অন্যদিন হলে হয়তো তমাল আবার ফিরে যেত ঘরে। হয়তো আবার ঝাঁপিয়ে পড়ত বিছানায়। কিন্তু আজ একটা অদ্ভুত আহ্লাদ টগবগ করছে তার মনে। এক অজানা রহস্য যেন তাকে ইশারায় ডাকছে।

কারবাইন্স কোভ সমুদ্র সৈকতটি এমনিতেই নির্জন। আন্দামানের পোর্ট ব্ল্যার থেকে দূরত্ব প্রায় মাইল দশেক। বিদেশি পর্যটকরা এলে অবশ্য ভোর থেকেই হেঁটে লেগে যায়। নইলে কদাচিত্ দল বেঁধে লোকজন আসে পিকনিক করতে। কখনও হেঁটে আবার কখনও বাসে। তাছাড়া অন্য সময় নির্জনে বিমোয় এই সৈকত।

तमल बारान्दा छेड़े नेमे एल नीचे। तरपर पाये पाये  
एगिल्ले गेल समुद्र सैकते। आज एकेबारे निर्जन कारवाइस  
कोभ। कोनओ पर्यटक नेई। मारे-मस्ये दु'एकटा बड़ टेउ  
एसे आछड़े पड़छे पाड़े। सेई आछड़े पड़र शब्द  
निर्जनता भेद करे छड़िये पड़छे बहूर।

6. निम्नलिखित में से **किसी एक** का बांग्ला में अनुवाद कीजिए। 15

(a) प्रेमचंद की कहानियों के अतिरिक्त उनके निबंधों का संकलन भी प्रकाशित किया गया है। आलोचनात्मक निबंध-संग्रह प्रेमचंदेर निर्वाचितो प्रबंधो, बांग्ला के आलोचकों में गंभीर विमर्श का केन्द्र बिन्दु रहा है। प्रेमचंद के सम्पूर्ण साहित्य को 'प्रेमचंद शतवार्षिकी संकलन' नाम से प्रकाशित किया गया है। इसके सम्पादक हैं - प्रदीप दासगुप्ता। प्रेमचंद की कहानियाँ, उपन्यास और निबंध तो बांग्ला में अनूदित ही हैं, उनकी कहानियों पर नाटक भी खेले जाते रहे हैं, और फ़िल्में भी बनी हैं। इस प्रकार बांग्ला साहित्य व संस्कृति जगत में प्रेमचंद एक अविस्मरणीय नाम हैं। और यह संभव हो पाया है एक मात्र अनुवाद के ही कारण। बांग्ला साहित्य की जिस विधा पर प्रेमचन्द का सर्वाधिक प्रभाव पड़ा है, वह है नाटक। बांग्ला नाट्य-जगत विशेष रूप से प्रेमचंद का ऋणी है। भारतवर्ष के अति साधारण किसान मजदूरों के शोषित एवं उत्पीड़ित जीवन का जीवंत रूप उन्होंने अपनी कहानियों में उकेरा था।

(b) द्वीपों की बस्तियों में भारत ही दिखता है-बंगाल, तमिलनाडु, केरल, कश्मीर, गुजरात, असम नहीं। सामान्य द्वीपवासी महसूसते हैं कि वे सब बनें ही क्यों? इनकी उपस्थिति यहाँ कभी-कभी व्यवधान ही तो उत्पन्न करती है। द्वीपों में एक छोर से दूसरे छोर तक हिन्दी बोली- समझी जाती है। हिन्दी-प्रचार-प्रसार के अभियान यहाँ नानी के सामने ननिहाल की बात-सी लगते हैं। फाइलों में अंग्रेजी उगलते भिन्न भाषा-भाषी कर्मचारी और अधिकारी कार्यालयों और प्रतिष्ठानों में हिन्दी में ही जुगाली करते हैं। राष्ट्रीय एकता की पुकार चौंकाती है कि कहीं पुकारने वाले का मानसिक संतुलन डगमगा तो नहीं गया। बच्चों से जब उनके मूल प्रदेश का नाम पूछा जाता है तब गर्व से वे अपने घर या क्वार्टर का नम्बर और कॉलोनी का नाम बता देते हैं। उन्हें दुर्गापूजा, पोंगल, ओणम, बैसाखी, दीपावली में अंतर ही नहीं लगता। मुहम्मद, माइकेल, मनोहर सब होली खेलते हैं। माता-पिता भी नहीं रोकते। पंडित के पास पादरी पालथी मारकर बैठ जाता है और पंडित रामनामी लिए मौलवी की कुशल-क्षेम पूछ आता है। सबके लिए सबके द्वार खुले हैं।

---